HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-II (History of Asia)

Unit-I (First Apium war(1839-42))

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 20

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें ☐☐☐

https://youtu.be/bUthQahOiAY

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

"चीन और ब्रिटेन के बीच हुए प्रथम अफीम युद्ध (1839 –42)"

प्रथम अफीम युद्ध (1839–42) ब्रिटेन और चीन के बीच हुआ। अंग्रेज व्यापारी चीन के साथ चाय और रेशमी कपड़ों का व्यापार करने के लिए आए और धीरे–धीरे चीन को अफीम उपलब्ध कराने लगे। जिससे अंग्रेज व्यापारियों को काफी फायदा होने लगा। इसके बाद अंग्रेजी व्यापारियों के कहने पर ब्रिटिश सरकार ने व्यापार पर से कठोर व्यापारिक प्रतिबंध हटाने के लिए तथा अन्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए एक ब्रिटिश दूत को चीनी सरकार के साथ लिखित संधि के लिए भेजा। लेकिन चीन की सरकार ने ब्रिटिश सम्राट के व्यापारिक संधि संबंधी प्रस्ताव को ठुकरा दिया। चीन में चीनी अधिकारी ब्रिटिश व्यापारियों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते थे। इस समस्या को सुलझाने के लिए ब्रिटेन के विदेश मंत्री ने नेपियर को भेजा, लेकिन नेपियर ने स्थिति को और अधिक बिगाड़ दिया। इसके बाद चीन और ब्रिटेन में मनमुटाव या तनाव बढ़ता गया। जो 1840 ई. में प्रथम अफीम युद्ध के रूप में फूट पड़ा। चूंकि यह युद्ध अंग्रेजों द्वारा अफीम के व्यापार को चीन में बढ़ाने के लिए किया गया था। इसी कारण इसका नाम अफीम युद्ध पड़ा।

अफीम युद्ध के निम्नलिखित कारण थे:–

✓**अफीम व्यापार–** प्रथम अफीम युद्ध का मुख्य कारण अफीम का व्यापार ही था। चीन में अफीम पहुंचाने के लिए चीनी व्यापारियों ने चीनी सरकार के मना करने पर भी अपनी सारी शक्तियां लगा दी। अफीम व्यापार में वृद्धि का पहला कारण यह था कि अकस्मात ही चीन में इसकी मांग बहुत बढ़ गई और चीन के साथ व्यापार में अफीम का स्थान भी निश्चित हो गया। जैसे– जैसे अधिकाधिक मात्रा में अफीम का आयात होने लगा वैसे – वैसे चीन अफीम की मांग बढ़ती गई। इस प्रकार 15 वर्षो के अंदर चीन में अफीम का आयात चौगुना हो गया। चीन की सरकार ने

बारंबार अफीम के आयात को रोकना चाहा और अफीम के प्रयोग पर पाबंदियां लगाई किंतु कोई परिणाम नहीं निकला। 1800 ई. में अफीम के व्यापार को पूर्णतया निषेध कर दिया गया फिर भी अफीम का व्यापार बढ़ता ही गया क्योंकि स्थानीय चीनी अधिकारियों की स्वीकृति से ब्रिटिश व्यापारी चोरी से चीन में माल लाते रहे।

अफीम के इस तस्कर व्यापार से चीन में वित्तीय संकट उत्पन्न हो गया। इस वित्तीय संकट को खत्म करने के लिए चीन की सरकार ने अफीम के व्यापार को किसी भी तरह बंद कर देने का निश्चय किया और इस कार्य के लिए 1839 ई. में लीन नामक एक दृढ़ प्रतिज्ञ अधिकारी को साही कमिश्नर बनाकर भेजा। उसने कैंटन पहुंचते ही विदेशी व्यापारियों को आदेश दिया कि उनके पास जितनी भी अफीम है वह उसे फौरन सरकार को सौंप दें, उसने यह भी धमकी दी कि यदि वे सारी अफीम उसके हवाले नहीं करेंगे तो वह सभी व्यापारियों को पकड़ लेगा और इस प्रकार उनको भूखों मरना पड़ जाएगा। बचाव का कोई उपाय न पाकर ब्रिटिश व्यापारियों ने 20000 अफीम की पेटियां उसके हवाले कर दिए। लिन ने उन सारे अफिमो को नमक और चूना मिलाकर नदी में बहा दिया और अंग्रेज व्यापारियों को यह चेतावनी दी कि यदि वे अफीम का व्यापार चीन के साथ दुबारा किए तो उन्हें प्राण दंड दिया जाएगा और साथ ही अंग्रेजों से व्यापारिक संबंध भी तोड़ लिया जाएगा। लिन ने अफीम व्यापार के विरुद्ध महारानी विक्टोरिया को भी एक पत्र लिखा। 'लिन' की कठोर कार्यवाही से अंग्रेज व्यापारी अत्यंत व्यग्र हो उठे और उनमें तीव्र उत्तेजना फैल गई। चीन और ब्रिटेन युद्ध के कगार पर खड़े हो गए।

✓ **ब्रिटेन के साम्राज्य विस्तार की लालसा :–** प्रथम अफीम युद्ध का मुख्य कारण ब्रिटेन के साम्राज्य विस्तार की लालसा भी थी। 19 वी सदी के पूर्वार्द्ध तक एशिया के एक बहुत बड़े भाग पर ब्रिटेन के साम्राज्य की स्थापना हो गई थी। अब वह चीन पर भी अधिकार जमाना चाहता था। इसके कई कारण थे। चीनन पर अधिकार हो जाने से ब्रिटेन को कई लाभ हो सकते थे। इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति बड़ी तीव्र गति से बढ़ रही थी और इसीलिए उसे बड़े बाजारों की आवश्यकता थी। प्रकार चीन पर राजनीतिक अधिकार हो जाने से यह विशाल भूखंड उसका बाजार बन सकता था।

✓ **को–हांग के नियंत्रण से मुक्ति की आकांक्षा –** प्रथम अफीम युद्ध का तीसरा मुख्य कारण को–हांग के नियंत्रण से मुक्ति की आकांक्षा भी थी। चीनी लोग अंग्रेज व्यापारियों का कभी भी आदर नहीं करते थे। वह उन्हें शोषक समझते थे। मंचू काल में चीनी व्यापारियों को विदेशी व्यापारियों से अलग रखा जाता था। सरकार द्वारा प्रमाणित दलाल विदेशी व्यापारियों की निगरानी और उनसे कर वसूल करते थे। इन दलालों को ही को–हांग कहा जाता था। को–हांग की अनुमति प्राप्त किए बिना कोई भी विदेशी जहाज कैंटीन नहीं आ सकता था और ना बिना उसकी इजाजत के चीनी लोगों से मिल सकता था। विदेशी व्यापारियों पर बहुत सारे प्रतिबंध थे। जो उन्हें बहुत बूरा लगता था। उन्हें अपने कारखानों के अहातों से बाहर घूमने की इजाजत न थी। वे पालकीनुमा कुर्सियों पर आ जा नहीं सकते थे। वे अपने साथ स्त्रियां को नहीं ला सकते थे। चीनी नौकर नहीं रख सकते थे। चीनी भाषा नहीं सीख सकते थे और चीनियों को इसाई नहीं बना सकते थे। इन सब बातों से अंग्रेज व्यापारी काफी दुखी थे। उन्होंने इन सब प्रतिबंधों को हटाने के लिए ही युद्ध का सहारा लिये।

✓ **समानता की इच्छा–** प्रथम अफीम युद्ध का चौथा मुख्य कारण समानता की इच्छा थी। चीन के लोग यूरोपियों को असभ्य और बर्बर मानते थे। उन्हें अत्यंत घृणा की दृष्टि से देखते थे। विदेशियों के बड़े से बड़े अधिकारियों के साथ उनका व्यवहार ऐसा होता था मानो वे अधिनस्थ राज्य के अधिकारी हो। तीन बार घुटने टेकने और 9 बार

Dr. GUDDU KUMAR (A.N.D. COLLEGE)

माथा टेकने का नियम विदेशियों के लिए अनिवार्य था। जिसे अंग्रेज पसंद नहीं करते थे। अतः इस अपमान से छुटकारा पाने के लिए ब्रिटेन चीन से कूटनीतिक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन सफलता नहीं मिली। अतः उसने अंत में युद्ध का सहारा लेने का निश्चय किया।

✓ **पश्चिमी कानूनों की मान्यता–** प्रथम अफीम युद्ध का पांचवा मुख्य कारण पश्चिमी कानूनों की मान्यता का प्रश्न भी था। अंग्रेजी व्यापारी काफी उदंड थे। वे चीनी कानूनों का उल्लंघन करते रहते थे।जब कभी चीन में कोई अंग्रेज अपराध करता तो उसको फैसला चीन की अदालत में ना होकर ब्रिटेन की अदालत में होता था, जिसे चीन पसंद नहीं करता था। अतः चीन की सरकार ने यह घोषणा किया कि सभी विदेशियों पर चीनी कानून लागू होगा और किसी विदेशी अपराधी को कैद करने का अधिकार सिर्फ चीन की पुलिस को होगा। लेकिन अंग्रेज व्यापारी इस घोषणा के विरुद्ध थे। क्योंकि चीनी लोग छोटे से छोटे अपराध के लिए कठोर से कठोर दंड देते थे, जो अंग्रेजों को पसंद नहीं थी। अतः पश्चिम के कानूनों को चीनी सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करवाने के लिए भी युद्ध का सहारा लेना पड़ा।

✓ **तात्कालिक कारण–** कमिश्नर लिन ने अफीम की जो पेटियां नदियों में फेकवाई थी। उससे अंग्रेज व्यापारी काफी बौखला गए थे। वे इसका बदला लेने के लिए बहाना ढूंढ रहे थे। इसी बीच जुलाई 1839 में कोलून में कुछ शराबी अंग्रेज नाविकों ने एक चीनी ग्रामीण की हत्या कर दी। लिन–त्जे–शू ने उन्हें पकड़ने का आदेश दिया। किंतु इलियट ने उन्हें सौंपने से इंकार कर दिया। इस पर दिन ने मकाउ के खाने–पीने के सामान की आपूर्ति काट दी और उसके नजदीक के फौज जमा कर दी। अंग्रेज हांगकांग चले गए तथा उन अंग्रेज नाविकों को सजा भी दिए, किंतु चीनी शासन को संतोष नहीं हुआ। फलस्वरूप तनाव बढ़ता गया। 3 नवंबर को दो ब्रिटिश जहाज चीनी पोतों से भिड़ गए। फलस्वरुप दोनों में युद्ध छिड़ गया।

 # अफीम युद्ध का प्रारंभ और अंत – फरवरी 1840 ई. में ब्रिटिश सरकार ने अंतिम रूप से चीन से लड़ने का फैसला कर लिया। जुलाई में अंग्रेजी बेड़ो ने कैंटेन पर आक्रमण कर उस पर अपना अधिकार जमा लिया, बाद में कैंटेन से हटकर अंग्रेजों ने चीन के उत्तरी भाग और यांगत्सी नदी पर नाकेबंदी कर ली। अंत में चीन ने अंग्रेजों से जनवरी 1841 ई. में समझौता कर लिया किंतु यह समझौता ज्यादा दिन तक नहीं टिक सका और अंग्रेजों ने पुनः आक्रमण कर बहुत सारे प्रदेशों पर अधिकार जमा लिया। यहां तक कि चीन की राजधानी पीकिंग पर भी आक्रमण कर दिया, अंत में हार कर मंचू शासन ने अंग्रेजों से नान किंग की संधि कर ली।

प्रथम अफीम युद्ध का परिणाम काफी महत्वपूर्ण निकला। इस युद्ध के बाद चीन की प्रतिष्ठा खत्म हो गई। इस युद्ध के बाद चीन का द्वार विदेशियों के लिए खुल गया तथा चीन की कमजोरी भी प्रकट हो गई। इस युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम "नानकिंग की संधि" थी, जो 29 अगस्त 1842 ई. को हुआ और युद्ध का अंत हो गया।

! धन्यवाद !

DR.GUDDY KUMARI (A.N.D.COLLEGE)